काले मेघा पानी दे

लेखक - धर्मवीर भारती

पाठ का सार :- गाँव में अकाल की स्थिति है। इंदर सेना या मेंढक-मंडली घर-घर पानी माँगने निकली है। इन के दो नाम हैं। इनके नग्न-स्वरूप शरीर, इनकी उछल-कूद, इनके शोर-शराबे, गली के कीचड़ में लोटपोट होने के कारण कुछ लोग इन्हें मेंढक-मंडली कहते थे। ये अपने आप को इंदर सेना कहते हैं।

दस-बारह से सोलह-अठारह वर्ष के बालक सबसे पहले "बोल गंगा मैया की जय" का जयकारा लगाते हैं और फिर गाते हैं -

काले मेघा पानी दे

गगरी फूटी बैल पियासा

पानी दे, गुड़धानी दे

काले मेघा पानी दे

फिर कहते हैं - "पानी दे मैया, इंदर सेना आई है।" उनकी पुकार सुन कर स्त्रियाँ उन पर बाल्टी, मटका आदि भर कर पानी फैंकते हैं। इंदर सेना कीचड़ में लोटपोट होती है और अगले घर की तरफ चल देती है।

लेखक को इंदर सेना पर पानी फैंकना पानी की बरबादी लगती है। उन्हें ये लगता है कि इन सब अंधविश्वासों के कारण ही हम अंग्रेजों से पिछड़े हैं, गुलाम हैं।

लेखक में आर्य समाजी विचार हैं। वे कुमार-सुधार सभा के उपमंत्री हैं, इसलिए अंधविश्वासों का विरोध करते हैं। परंतु वे जिन से सबसे अधिक प्रेम करते हैं, वो हैं जीजी। जीजी का कोई भी पूजा, पाठ, त्योहार, अनुष्ठान लेखक के बिना पूरा नहीं होता।

जब इंदर सेना जीजी के घर पानी माँगने आई, तो जीजी ने लेखक को पानी डालने के लिए कहा। लेखक ने पानी डालने से इंकार कर दिया। जीजी ने बड़ी मुश्किल से इंदर सेना पर पानी डाला। लेखक सारा दिन जीजी से रूठा रहा।

जीजी ने लेखक को समझाते हुए कहा - ये पानी की बरबादी नहीं, बल्कि प्रकृति का नियम है। कुछ पाने के लिए कुछ देना पड़ता है। किसी के पास लाखों करोड़ों रुपए हैं। वो कुछ दान कर देता है, तो वो दान नहीं। दान तो वह है कि जिस चीज की हमें जरूरत है, उसमें से कुछ देना। उसी का ही फल मिलता है।

एक किसान तीस-चालीस मन गेहूँ उगाने के लिए पाँच -छह सेर गेहूँ क्यारियों में डालता है, तब उसे गेहूँ मिलता है। ठीक उसी तरह पानी की बुवाई करेंगे, तो काले मेघ पानी लेकर आयेंगे।

इस घटना को कई वर्ष बीत गए। हम देश के लिए कुछ करते तो हैं नहीं, पर हमारी माँगें बहुत बड़ी-बड़ी हैं। पर हम देश के लिए थोड़ा-सा भी त्याग नहीं करना चाहते। सब अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हैं। हम दूसरों के भ्रष्टाचार की खबरें बहुत मजे लेकर कहते हैं, पर हम कभी नहीं सोचते कि हम भी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं हैं? काले बादल बरसते हैं, पर गगरी फूटी की फूटी रहती है, बैल प्यासे रह जाते हैं। अर्थात् देश में साधनों की कमी नहीं है, देश के हित-कार्य करने वालों की कमी भी नहीं है, परंतु संसाधनों का लाभ जिन तक पहुँचना चाहिए उन तक नहीं पहुँचता, भ्रष्टाचारी बीच में ही खा जाते हैं। आखिर ऐसा कब तक चलेगा?

VASUNDHARAHINDI.COM

पठित **गद्यांश**

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दो :-

(1)

लेकिन इस बार मैंने साफ इंकार कर दिया। नहीं फैंकना है मुझे बाल्टी भर-भर कर पानी इस गंदी मेंढक-मंडली पर। जब जीजी बाल्टी भर कर पानी ले गई, उनके बूढे पाँव डगमगा रहे थे, हाथ-पाँव काँप रहे थे, तब भी मैं अलग मुँह फुलाए खड़ा रहा। शाम को उन्होंने लड्डू-मठरी खाने को दिए, तो मैंने उन्हें हाथ से अलग खिसका दिया। मुँह फेर कर बैठ गया, जीजी से बोला भी नहीं। पहले वे भी तमतमाई, लेकिन ज़्यादा देर तक उनसे गुस्सा नहीं रहा गया। पास आकर मेरा सर अपनी गोद में लेकर बोली,"देख भइया रूठ मत। मेरी बात सुन। यह सब अंधविश्वास नहीं है। हम इन्हें पानी नहीं देंगे तो इंद्र भगवान हमें पानी कैसे देंगे?" मैं कुछ नहीं बोला। फिर जीजी बोली, "तू इसे पानी की बरबादी समझता है, पर यह बरबादी नहीं है। यह पानी का अर्ध्य चढ़ाते हैं। जो चीज मनुष्य पाना चाहता है, उसे पहले देगा नहीं, तो पाएगा कैसे? इसलिए ऋषि-मुनियों ने दान को सबसे ऊँचा स्थान दिया है।"

(पृष्ठ 102)

प्रश्न क) लेखक ने किस चीज के लिए इंकार कर दिया और क्यों?

उत्तर : लेखक ने गंदी मेंढक-मंडली पर पानी डालने से इंकार कर दिया, क्योंकि लेखक का मानना था कि यह पानी की बरबादी है और यह केवल अंधविश्वास है।

प्रश्न ख) जीजी ने लेखक के मुँह फुलाने पर कैसी प्रतिक्रिया की और क्यों?

उत्तर : लेखक के मुँह फुलाने पर शुरू में जीजी भी तमतमाई, पर अधिक समय तक गुस्सा नहीं रह सकी। फिर वह बोली,"इंदर सेना पर पानी फैंकना अंधविश्वास नहीं, बल्कि इंदर देवता पर अर्ध्य चढ़ाना है। जो चीज हम पाना चाहते हैं, पहले उसे देना पड़ता है।"

प्रश्न ग) लेखक व जीजी में क्या मतभेद था?

उत्तर : लेखक का मानना था कि इंदर सेना पर पानी फैंकना अंधविश्वास है, जबकि जीजी का मानना था कि यह अंधविश्वास नहीं, बल्कि इंदर देव को अर्ध्य चढ़ाना है। कुछ पाने के लिए कुछ देना पड़ता है।

प्रश्न घ) मेंढक-मंडली किसे कहा गया है?

उत्तर : घर-घर घूमकर अर्ध नग्न शरीर, उछल-कूद मचाने वाले, उधम मचाने वाले बच्चे, जो घर-घर जाकर पानी माँग रहे हैं, उसे मेंढक-मंडली कहा गया है।

(2)

कुछ देर चुप रही जीजी, फिर मठरी मेरे मुँह में डालती हुई बोली,"देख! बिना त्याग के दान नहीं होता। अगर तेरे पास लाखों-करोड़ों रुपए हैं और उसमें से तू दो -चार रुपए किसी को दे दे तो यह क्या त्याग हुआ? त्याग तो वह होता है कि जो चीज तेरे पास भी कम है, जिसकी तुझको भी जरूरत है तो अपनी जरूरत पीछे रखकर दूसरे के कल्याण के लिए उसे दे दो। त्याग तो वह होता है, दान तो वह होता है, उसी का फल मिलता है।"

(पृष्ठ 103)

प्रश्न क) जीजी ने लेखक के मुँह में मठरी किस लिए डाली?

उत्तर : लेखक जीजी से रूठा था। उसे मनाने के लिए जीजी ने लेखक के मुख में मठरी डाली।

प्रश्न ख) जीजी ने त्याग और दान की महिमा किस प्रकार समझाई?

उत्तर : जीजी का कहना है कि किसी के पास लाखों-करोड़ों रुपए हैं, उसमें से दो-चार रुपए अगर किसी को दे दिए जाएँ, उसे त्याग या दान नहीं कहते। त्याग या दान वो होता है, जिस चीज की हमें जरूरत है, उसका त्याग करना ही असली दान है।

प्रश्न ग) श्रेष्ठ दान किसे कहा गया है?

उत्तर : जब दानी किसी चीज का अभाव अनुभव करे और व्यक्ति उसी चीज का दान दूसरों के कल्याण के लिए कर दे, उसे श्रेष्ठ दान कहा गया है।

प्रश्न घ) किस प्रकार के दान का फल मिलता है?

उत्तर : दूसरों के कल्याण व हित की भावना के साथ किए गए दान का ही फल मिलता है।

VASUNDHARAHINDI.COM

(3)

जीजी बोली, "देख तू तो अभी से पढ़-लिख गया है। मैंने तो गाँव के मदरसे का भी मुँह नहीं देखा। पर एक बात देखी है कि अगर तीस-चालीस मन गेहूँ उगाना है तो किसान पाँच-छह सेर अच्छा गेहूँ अपने पास से लेकर जमीन में क्यारियाँ बना कर फेंक देता है, उसे बुवाई कहते हैं। यह जो सूखे में हम अपने घर का पानी इन पर फेंकते हैं, वह भी बुवाई है। यह पानी गली में बोएँगे तो सारे शहर, कस्बा, गाँव पर पानी वाले बादलों की फसल आ जाएगी। हम बीज बनाकर पानी देते हैं, फिर काले मेघा से पानी माँगते हैं। सब ऋषि-मुनि कह गए हैं कि पहले खुद दो तब देवता तुम्हें चौगुना-अठगुना करके लौटाएँगे। भइया, यह तो हर आदमी का आचरण है, जिससे सब का आचरण बनता है। यथा राजा तथा प्रजा - सिर्फ यही सच नहीं है। सच यह भी है - यथा प्रजा तथा राजा। यही गाँधी जी महाराज कहते हैं।" जीजी का एक लड़का राष्ट्रीय आंदोलन में पुलिस की लाठी खा चुका था, तब से जीजी गाँधी जी महाराज की बात अकसर करने लगी थी।

(पृष्ठ 103)

प्रश्न 1) उपरोक्त कथन किसका है और किस प्रसंग में कहा गया है?

उत्तर : उपरोक्त कथन जीजी का है। जब लेखक जीजी से कहता है कि इंदर सेना पर पानी फेंकना अंधविश्वास है, तब जीजी कहती है कि यह अंधविश्वास नहीं है, बल्कि पहले तुम कुछ दान करो, फिर देवता कई गुना करके आपको वापस करेंगे।

प्रश्न 2) बुवाई का क्या अर्थ है? बादलों की फसल कब प्राप्त होगी?

उत्तर: बुवाई का अर्थ है - पृथ्वी में बीज बोना। बादलों की फसल तभी प्राप्त होगी, जब इंदर सेना पर पानी डालेंगे, क्योंकि यह एक प्रकार से पानी की बुवाई है।

प्रश्न 3) अनुच्छेद में दान के महत्त्व को किस प्रकार समझाया गया है?

उत्तर : कुछ पाने के लिए कुछ देना पड़ता है। एक किसान पाँच-छह सेर गेहूँ बीज के रूप में बोता है, तब उसे कई सेर गेहूँ प्राप्त होती है। ठीक इसी प्रकार पहले पानी की बुवाई करेंगे, तभी पानी वाले बादलों की फसल आएगी।

प्रश्न 4) "व्यक्ति के आचरण से समाज का आचरण बनता है।" इस कथन को जीजी ने किस प्रकार समझाया है?

उत्तर : प्रत्येक व्यक्ति का आचरण सब का आचरण बन जाता है। इसीलिए कहा जाता है - यथा राजा तथा प्रजा। कई बार प्रजा के अनुसार राजा होता है, अर्थात् समाज के लोगों का आचरण ही समाज का आईना होता है।

(4)

इन बातों को आज पचास से ज्यादा बरस होने को आए, पर ज्यों की त्यों मन पर दर्ज हैं। कभी-कभी कैसे-कैसे संदर्भों में ये बातें मन को कचोट जाती हैं। हम आज देश के लिए करते क्या हैं? माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं, पर त्याग का कहीं नाम-निशान नहीं है। आज स्वार्थ एकमात्र लक्ष्य रह गया है। हम चटखारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें करते हैं, पर क्या कभी हमने जाँचा है कि अपने स्तर पर, अपने दायरे में हम उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं? काले मेघा दल के दल उमड़ते हैं, पानी झमाझम बरसता है, पर गगरी फूटी की फूटी रह जाती है, बैल पियासे के पियासे रह जाते हैं। आखिर कब बदलेगी यह स्थिति?

(पृष्ठ 103)

प्रश्न क) लेखक को देश के संदर्भ में कौन-सी बात कचोटती है?

उत्तर : हमारी माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं, पर हम त्याग बिल्कुल नहीं करते। अपना स्वार्थ सिद्ध करना हमारा एकमात्र लक्ष्य है। यह बात लेखक को कचोटती है।

प्रश्न ख) भ्रष्टाचार के बारे में मनुष्यों का आचरण कैसा है?

उत्तर : आज का मनुष्य भ्रष्टाचार की बातें चटखारे लेकर करता है, पर सच ये है कि हम स्वयं भी धीरे-धीरे भ्रष्टाचारी होते जा रहे हैं। इस दल-दल में फँसते जा रहे थे हैं।

प्रश्न ग) अनुच्छेद में काले मेघा किसके प्रतीक हैं?

उत्तर : अनुच्छेद में काले मेघा सुविधाओं और संसाधनों के प्रतीक हैं। लेखक का कहना है कि देश में सुविधाओं और संसाधनों की कोई कमी नहीं है।

प्रश्न घ) पानी बरसने पर भी गगरी क्यों फूटी रहती है? बैल क्यों प्यासे रह जाते हैं?

उत्तर : पानी सुविधाओं और संसाधनों का प्रतीक है। बैल आम जनता का प्रतीक है।

लेखक का कहना है कि देश में सुविधाओं व संसाधनों की कमी नहीं है, पर भ्रष्टाचारी लोग उसे आम लोगों तक पहुँचने नहीं देते।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1) लोगों ने लड़कों की टोली को मेंढक-मंडली नाम किस आधार पर दिया?

उत्तर : दस-बारह साल से सोलह-अठारह वर्ष के बच्चे नंगे बदन, उछल-कूद करते, शोर-शराबा करते पानी माँगते हैं और गली में हुए कीचड़-कादे में लोट लगाते हैं। कुछ लोग इनसे चिढ़ते हैं तथा इन्हें मेंढक-मंडली कहते हैं।

ये बच्चे अपने आप को इंदर सेना कहते हैं। इनका मानना है कि ये इंदर देव के सैनिक हैं। लोग इन पर पानी फेंकेंगे, तो इंदर देव प्रसन्न होकर बादल के रूप में सबको पानी देंगे।

प्रश्न 2) जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया?

उत्तर : जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को अनेक प्रकार से सही ठहराया :-

I - जीजी का कहना है कि हम इंदर देव पर पानी का अर्ध्य चढ़ाएंगे तो वो हमें वर्षा के रूप में पानी देंगे।

II - त्याग की भावना से किए गए दान का ही महत्व होता है। अगर किसी के पास लाखों-करोड़ों रुपए हैं और वो अगर कुछ रुपए दान कर देता है, तो वह दान नहीं। बल्कि जिस चीज की हमें जरूरत है, उसी चीज का दूसरे के कल्याण के लिए दान करना ही असली दान है। जैसे पानी की कमी होने पर पानी का दान ही वर्षा लेकर आएगा।

III - किसान चार-छह सेर गेहूँ खेतों में बोता है। बदले में तीस-चालीस सेर गेहूँ मिलती है। ठीक उसी प्रकार थोड़े से पानी की बुवाई से वर्षा के रूप में खूब पानी मिलेगा।

प्रश्न 3) "पानी दे गुड़धानी दे"। मेघों से पानी के साथ-साथ गुड़धानी की माँग क्यों की जा रही है?

उत्तर : पानी के साथ गुड़धानी की माँग इसलिए की जा रही है कि मेघ बरसेंगे तो ईख व धान की अच्छी फसल होगी। ईख व धान से ही गुड़धानी बनती है। अर्थात् हमारा देश कृषि प्रधान देश है। वर्षा होगी तो देश की अर्थव्यवस्था भी सुधरेगी। इसीलिए मेघों से पानी के साथ-साथ गुड़धानी की माँग भी की गई है।

प्रश्न 4) "गगरी फूटी बैल पियासा"। इंदर सेना के इस खेल-गीत में बैलों के प्यासा रहने की बात क्यों हुई है?

उत्तर : वर्षा न होने के कारण जीव-जंतुओं को भी पानी नहीं मिल रहा, वो प्यास से मर रहे हैं। इसीलिए गीत में कहा गया है कि वर्षा न होने के कारण बैल प्यासे हैं। इस कारण कृषि व्यवस्था प्रभावित हो रही है। अर्थात् वर्षा न होने के कारण प्रकृति प्रभावित है, सभी जीव-जंतु प्रभावित हैं तथा अर्थव्यवस्था भी प्रभावित है।

प्रश्न 5) इंदर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय क्यों बोलती है? नदियों का भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्व है?

उत्तर : भारत एक कृषि प्रधान देश है, इसलिए देश पानी पर निर्भर है। इसीलिए नदियों का भारतीय जीवन में बहुत महत्व है; इसीलिए हर शुभ अवसर पर हम नदियों का नाम लेते हैं। इंदर सेना भी सबसे पहले गंगा मैया की जय बोलती है। गंगा भारत की पवित्र नदी है। इसका हमारी संस्कृति से बहुत गहरा संबंध है।

हमारे देश के मुख्य शहर नदियों के किनारे ही बसे हैं। हमारा सांस्कृतिक व सामाजिक विकास नदियों के किनारे ही हुआ है, जैसे गंगा नदी के किनारे हरिद्वार, बनारस, इलाहाबाद, कोलकाता आदि मुख्य नगर बसे हैं।

प्रश्न 6) रिश्तों में हमारी भावना शक्ति का बँट जाना विश्वासों के जंगल में सत्य की राह खोजती हमारी बुद्धि की शक्ति को कमजोर करता है। पाठ में जीजी के प्रति लेखक की भावना के संदर्भ में इस कथन के औचित्य की समीक्षा कीजिए।

उत्तर : रिश्तों में हमारी भावना शक्ति बँट जाती है, सत्य को खोजती हमारी बुद्धि की शक्ति कमजोर हो जाती है, यह कथन बिल्कुल सत्य है। लेखक जीजी से भावनात्मक रूप से जुड़ा है। इस कारण जीजी सारे धार्मिक कार्य लेखक से करवाती है। लेखक भी जीजी की भावनाओं को ठेस न पहुँचे, इसलिए जीजी के कहे अनुसार सारे कार्य करता है।

जब इंदर सेना पर पानी फेंकने की बात आई, तब लेखक की तर्कशील बुद्धि ने इसे अंधविश्वास कहा और कहा कि वह पानी नहीं डालेगा। वह जीजी से नाराज भी हो गया। परंतु जीजी के तर्कों के आगे वह कुछ न बोल सका। लेखक जीजी भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाना चाहता था।

इसलिए सिद्ध होता है कि भावनाओं के आगे सत्य खोजती बुद्धि की शक्ति कमजोर हो जाती है।

प्रश्न 7) दिनोंदिन गहराते पानी के संकट से निपटने के लिए क्या आज का युवा वर्ग 'काले मेघा पानी दे' की इंदर सेना की तर्ज पर कोई सामूहिक आंदोलन प्रारंभ कर सकता है? अपने विचार लिखिए।

उत्तर : पानी के गहराते संकट से निपटने के लिए आज के युवक बहुत कुछ कर सकते हैं। पानी को सुरक्षित करने के लिए युवक कई कार्य कर सकते हैं। जैसे घर-घर में वर्षा के जल को इकट्ठा किया जा सकता है, गाँव में तालाब खुदवा सकते हैं, भूमि के जल के स्तर को बढ़ाने के लिए यत्न किए जा सकते हैं।

प्रश्न 8) लेखक इंदर सेना पर पानी फेंकने का समर्थक क्यों नहीं था? उसके रूठ जाने पर जीजी ने उसे क्या कहकर समझाया?

उत्तर : लेखक इंदर सेना पर पानी फेंकने का समर्थन इसलिए नहीं करता क्योंकि यह उसे अंधविश्वास लगता है, पानी की बर्बादी लगती है।

लेखक जब जीजी से रूठ गया तो जीजी ने कहा कि कुछ पाने के लिए पहले अपनी जरूरत की चीज का त्याग करना पड़ता है। जीजी ने यह भी कहा कि किसान कुछ गेहूँ बोता है, बदले में कई गुना गेहूँ पाता है। इसी प्रकार पानी का थोड़ा दान करने के बदले बादल रूपी फसल उत्पन्न होगी।

प्रश्न 9) सूखे के कारण कैसी स्थिति हो जाती है?

उत्तर : सूखे के कारण पानी की कमी हो जाती है। जीव-जंतु और प्रकृति सभी पानी के लिए तरसने लगते हैं। खेतों की मिट्टी सूख कर पपड़ी बन जाती है। कुएँ व जल के स्रोत सूख जाते हैं। घरों में पानी समय पर आता है और बहुत कम समय के लिए आता है।

प्रश्न 10) लेखक ने लोक प्रचलित विश्वासों को अंधविश्वास कहकर उनके निराकरण पर बल दिया है। इस कथन की विवेचना कीजिए।

उत्तर : पाठ में लोक प्रचलित विश्वास का वर्णन किया गया है। पानी नहीं बरसने पर इंदर सेना के नाम पर गाँव के बच्चे घर-घर जाकर पानी माँगते हैं और लोग इन पर पानी फेंकते हैं, ये सोच कर कि इनको दिया गया पानी इंदर देव को प्रसन्न करेगा और वर्षा होगी।

लेखक इंदर सेना पर पानी फेंकने को पानी की बरबादी और अंधविश्वास मानते हैं। लेखक की सोच है कि इस तरह के अंधविश्वास आज खत्म होंगे, तभी देश का विकास होगा।

प्रश्न 11) 'काले मेघा पानी दे' पाठ की इंदर सेना युवाओं को रचनात्मक कार्य करने की प्रेरणा दे सकती है। तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर : पाठ की इंदर सेना युवाओं को रचनात्मक कार्य करने की प्रेरणा दे सकती है। युवक अगर सामूहिक प्रयास करें तो समाज की कई बुराइयों को समाप्त कर सकते हैं। युवक अगर संगठित होकर वर्षा के जल को इकट्ठा करने का प्रयास करें तो उस जल से पृथ्वी पर उत्पन्न होने वाले जल संकट को काफी हद तक कम किया जा सकता है। केवल इतना ही नहीं, शिक्षा के क्षेत्र में भी वो महत्त्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं।

* * * * *

VASUNDHARAHINDI.COM